दाता दयाल–गुलस्तानें हजार रंग

आग मुरझाई हुई थी। दम के दम में बुझ जाती। आपने फूंक मारी उसे जिंदा किया। इसी प्रकार परमात्मा ने भी मिट्टी के पुतले में फूंक मारी और इंसान को जिंदा कर दिया। इंसान के अंदर जो रूह है वह परमात्मा की ही है। परमात्मा ने ही इसे जिंदा किया नहीं तो यह निर्जीव था।

सारा खेल तथा जीवन का तमाशा केवल तुम्हारे ख्याल का ही है। अगर तुम्हारा ख्याल किसी जगह पर या अपने किसी अंग पर नहीं है तो वह तुम्हारे लिए उतने समय के लिये मुर्दा है। अर्थात् आप जीये तो जग जीया, आप मरे तो जग मरा। खुदा भी हमारे ख्याल के कारण ही जिन्दा है।

खुशी हम में है, बाहर की वस्तुओं में खुशी नहीं है। हमारे भावों की खिंचावट ने बाहर में खुशी का बनावटी केन्द्र बना लिया है। बाहर के केन्द्र से जो खुशी मिली वह अपने ही ख्याल का प्रतिबिम्ब है। जिसको अपना मान लो तो खुशी उसे उलग समझो तो नाखुशी।

एक सज्जन बोले, "है खुदी जब तक इंसान में खुदा मिलता नहीं।" हमने कहो इसे यूं कहिए, "हो खुदी जब तक न इंसान में खुदा नहीं मिलता।" वो बोले, "खुदा और खुदी दोनों एक साथ कैसे?" हमने कहा सुनो खुदी से खुदा मिलता है। जब तक ब्रह्म के साथ माया न होगी ब्रह्म को कौन पहचानेगा। हमें प्रत्येक वस्तु का ज्ञान खुदी से ही होता है।

विवेकानन्द का कथन है–'कोई वस्तु अपने सिवाय मुझे हानि नहीं पहंचा सकती और न कोई अपने सिवाय मुझे लाभ पहुंचा सकता है। मैं ही अपना मित्र हूं और मैं ही अपना शत्रु हूं।

सच्चा त्यागी वह है जिसे सब कुछ मिला हुआ है पर वह इसकी परवाह तक नहीं करता। वह दुनिया में रहता है मगर दुनिया का होकर नहीं रहता।

आंखों से देखने की इच्छा करना सगुण उपासना है या सगुण भक्ति है और ख्याल से देखने की इच्छा रखना निर्गुण भक्ति है। इसमें लेशमात्र भी भेद नहीं, दोनों एक जैसे हैं, परंतु प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है कि वह जैसा चाहे वैसा ढ़ंग अपनी उपासना का अपना ले।

यदि इंसान में परमात्मा की जरा सी भी समझ आ जाए तो उसकी अपनी जिंदगी की सारी कठिनाइयां स्वयं हल हो जायेंगी।

भक्ति और उपासना के कर्त्ता–धरता विष्णु हैं, ज्ञान के अधिष्ठाता शिव हैं और कर्म के मुखिया ब्रह्मा हैं। विष्णु सत हैं, शिव तम हैं और ब्रह्मा रज हैं। न सत में क्रिया शक्ति है न तम में, क्रिया शक्ति तो केवल रज में है। विष्णु और शिव में मोक्ष का प्रश्न ही नहीं पैदा होता। बंध और मोक्ष तो केवल रज में है और इसी कारण इसे कर्म का मार्ग कहा गया है।

आध्यात्मिकता

शरीर, मन और आत्मा के बीच पूर्ण एकता का नाम आध्यात्मिकता है। शरीर कर्मकाण्डी, मन ज्ञानकाण्डी और आत्मा उपासना काण्डी है। जीवन इन तीनों का मेल–मिलाप है। हम तो सांसारिक कारोबार तक को आध्यात्मिकता का नाम दे सकते हैं परंतु शर्त यह है कि मन की घड़त विशेष प्रकार की बना ली जाए।

किसी को भूल कर भी यह मत कहो कि तुम असभ्य तथा दुर्भाग्यशाली हो। किसी को यह भी मत सुझाओ कि तुमसे कुछ नहीं हो सकता। ऐसा कहना पाप है क्योंकि ऐसे शब्द किसी के जीवन को नष्ट कर सकते हैं–इनमें विष का प्रभाव है। किसी को जान से मार देना उतना बुरा नहीं है जितना कि उसे साहसहीन बनाना है।

बच्चों में असीमित सम्भावनायें छिपी हैं तुम उनका मूल्यांकन नहीं कर सकते। उनको खेल खेलने दो। समय पाकर वे अपना मूल्य आप लगा लेंगे। जिसकी राह में रूकावटें नहीं आती, वह सफल नहीं होता। जरा हौसला रखो प्रकृति समय आने पर नई नई युक्तियां बच्चों को सुझाती रहेगी और सफलता के भेद उन्हें बताती रहेगी।

जिस व्यक्ति की जैसी तवज्जह होती है, वह वैसा ही काम करने के लिए रचना में आया है। उसकी रूचि, उसकी आदत और उसकी योग्यता प्रकृति ने वैसी ही बनाई है। प्रत्येक जीवन का उद्देश्य भिन्न होता है।

हर प्रकार के बुरे और गंदे विचार में एक विशेष प्रकार का विष होता है जो सबसे पहले सोचने वाले को ही बिगाडता है और जो भोजन वह खाता है उसके प्रभाव से उसमें विषैलापन आ जाता है। आंखों से, मस्तिष्क से एवं शरीर के अन्य अंगों से उसके भीतरी प्रभाव प्रकट होते रहते हैं।

सुनो! अभ्यास करने से तन्दुरूस्ती देने वाला खून मस्तिष्क के उस भाग की ओर जायेगा जिसमें कल्याणकारी ख्यालात पैदा करने की योग्यता है। ऐसी दशा में गन्दे ख्यालात भोजन न पाकर गतिहीन हो जायेंगे। परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि वे मर जांयेगे। ऐसा भी संभव है कि किसी समय अवसर पाकर वे फिर उभर आयें।यदि कोई अभ्यासी है तो उसकी बात मन को हिला देती है।

हमें अपने अध्यात्मिक जीवन में ईश्वर को मां मानकर बच्चे की तरह कहना चाहिए "तेरे सिवाय मेरा कोई नहीं" फिर वह भी मां बनकर दिखा देगा "मेरे सिवा तेरा कोई नहीं।" बच्चा बनकर मालिक के चरणों में झुको और अपना कर्त्तव्य पूरा करो, बाकी वह जाने उसका काम।

विश्वास संसार में अद्भुत वस्तु है। यदि विश्वास नहीं तो उसके चरणों में प्रार्थना करो कि वह तुम्हें अपने चरणों में श्रद्धा और विश्वास प्रदान करे। वैसे तो प्रार्थना भी हमसे वही करवाता है। प्रार्थना करने से मन में धीरे–धीरे निर्मलता आती जाती है और फिर श्रद्धा और विश्वास भी पक्का हो जाता है और विश्वास से ही अंतर में मालिक के दर्शन होंगे।

उठते–बैठते, सोते–जागते उसी का ध्यान रहे। कुछ दिनों में ऐसी आदत हो जायगी कि आपके अन्दर उसका ध्यान हर समय अपने आप ही बना रहेगा।

'अब आदमी कुछ और ही हमारी नजर में है। जब से सुना है यार लिबासे बसर में है।'

दुनिया के दुखों से दुखी होकर न मालिक में अवगुण देखो, न अपने आप में देखो, न दूसरों को दोषी समझो। जिंदगी मिली है, इसका विकास कई तरह से होता है। कई अवसरों पर चिन्ता और दुख अमृत का काम करते हैं। गरीबी में संर्धष करने की शक्ति मिलती है और छुपी हुई शक्तियां उभर कर आती हैं। तकलीफ को भुलाते रहो क्योंकि याद करने की चीज तो एक मालिक ही हैं।

आध्यात्मिक ख्याल रखने वाला व्यक्ति यदि जानबूझकर भी जहर खा ले तो भी उस पर उस जहर का असर नहीं होता। अमृत और विष के भण्डार मनुष्य के अपने ही अन्दर हैं।

बुढ़ापे में तो अनुभव हो जाना चाहिए कि अब तक जो किया वह स्वप्न था, जो सुना कहानी थी। इससे मन हटाकर उदासीनता आ जानी चाहिए।

ज्ञानी कर्म के बंधुए नहीं होते। उन्हें न कर्म करने की इच्छा होती है और न उनके फलों की। ज्ञानी अपने को सबका आदि और अन्त समझता है। वर्तमान, भूत और भविष्य उसे माला के सूत में पिरोए हुए मनके लगते हैं। यहां ज्ञानी का मतलब है जिसने अपने आपको जान लिया है।

सहज ही धुन होत है हरदम घट के मांहि।
सुरत शब्द मेला भया, मुख की हाजत नाहीं।। कबीर

अन्दर में तीन हालतें पैदा होती हैं–प्रमाण, अनुमान और शब्द। प्रमाण तो इन्द्रियों का ज्ञान है–देखना, सुनना, चखना आदि। सोचना और अनुमान लगाना और परिणाम को देखकर कारण का ख्याल करना अनुमान कहलाता है। इसका संबंध मन से है। शब्द शब्दगुरू की शहादत (गवाही) और आप्त पुरूष की वाणी है, जो हर हालत में मानने के योग्य है।

अन्तरीय जगत में मन अनुमान करता है, मन की आंख ही अब गुरू के नूरानी दृश्य को देखती है, मन के कान ही अब गुरू के आप्त वचनों को सुनते हैं और मन ही पूर्णरूप से अजपाजाप करते हुए किसी और से कोई संबंध नहीं रखता। इस प्रकार सुरत की धार बताये हुए केन्द्र की ओर चलती रहती है।

इस प्रकार आप अपने मंदिर में दाखिल हो गये (आपका सिर ही मंदिर है)। यहां ओऽम् ओऽम् या बम बम की ध्वनि होती रहती है। यह गुरू का स्थान है। यही त्रिकुटी है, यही ब्रह्म है। जो यहां आया गुरूमुख बना। यहां आते ही ध्यान की मग्नता की हालत आने लगती है।

इस लीनता या मग्नता में एक प्रकार का अंधेरा है जिसे अति अंधकार कहते हैं। यहां हाथ को हाथ नहीं सूझता। इस हालता का नाम सुन्न और महासुन्न है। यह परब्रह्मपद है। यह शून्यवादी बौद्धों का धुरपद है।

इससे आगे भंवरगुफा है। यह स्वास्तिक है। सुन्न में चार प्रकार की आवाजें सुनाई देती हैं। भंवरगुफा से अंतरी ध्वनि निकलती है और ब्रह्म की उत्पत्ति यहां से ही होती है। यहां से बांसुरी की मधुर ध्वनि की तरह साल–साल शब्द आता है।

इससे आगे सतलोक और सतधाम आता है। यहां ध्वनि में सत–सत की आवाज आती है। यह पूर्ण स्थान है और यहां पूर्ण बीन अपना राग सुनाकर कानो पर लीनता व समाधि की मुहर लगा देती है। इससे आगे राधास्वामी धाम है जो सबसे ऊँचा है। यही संतों का धुरपद धाम है।

इष्ट का अर्थ है उद्देश्य, मुराद, आइडियल। आइडियल के असली अर्थ ख्याली हैं, जो आइडियल मजबूती के साथ कायम हो जाए वह आइडियल है। इष्ट का अर्थ दर्पण देखना भी है। यह अपने ही दिल के अन्दर देखना होता है। दिल की वृत्तियों को एकाग्र होकर देखना आदर्श है।

दिल से ऊंची है अपनी जात, अपना स्वरूप और अपनी हस्ती जो अचल, अटल और गतिहीन है। इसी को इष्ट कहा है। इसकी तीन अवस्थाएं हैं–एक बाहरी जगत की, दूसरी आंतरिक जगत की और तीसरी खास अपनी हस्ती की। अपनी सत्ता भी मानी हुई है। इससे परे एक हालत और

आती है जिसे चौथापद कहते हैं। तीसरे पद तक तो खेल माया का है लेकिन चौथे पद में मन और वाणी भी गुम हो जाते हैं। उसे धुरपद और निर्वाण भी कहते हैं। यहां बुद्धि की पंहुच महा कठिन है।

जो हो गया सो हो गया। बीता हुआ समय वापिस नहीं आता, बीती हुई जिंदगी लौटकर वापिस नहीं आती। लेकिन जो समय मौजूद है वह अभी तक हमारे अख्तियार में है। इंसान ने अपनी पिछली जिंदगी में जो गलतकारी की है उसे भुला देने में ही उसकी भलाई है, आगे उसे न दुहराना ही समझदारी है।

स्थितियों और परिस्थितियों पर तो हम काबू नहीं पा सकते क्योंकि वे हमारे अधिकार में नहीं है किन्तु दिल तो हमारा है और हमारे करीब है। इसमें हम जैसा चाहें परिवर्तन ला सकते हैं। यदि हम दिल में परिवर्तन ले आये ंतो यह हमारी जिंदगी को पलट देगा।

मैं तो तुम्हारे पाप को भी मालिक की देन समझता हूं। ये ही तुम्हारी उन्नति और महानता का कारण बनेंगे। पाप करने के बाद कम से कम तुम्हें भले–बुरे की पहचान तो आई, अब इन कमियों पर काबू पाओ और शक्तिशाली बनो। प्रकृति किसी भी अवस्था में तुम्हारी विरोधी या शत्रु नहीं है, बल्कि वह तुम्हारे सामने लालच और प्रेरणा का सामान रखकर तुम्हारी परीक्षा लेते हुए तुम्हें साहसी और हिम्मतवाला बना रही है। माया बुरों के लिए बुरी और भलों के लिए भली है।

जब हम जोर लगाकर या विशेष तदबीर करके अपने अंदर छिपे हुए देवता को अपनी सहायता के लिए बुला सकते हैं तो इसी प्रकार ब्रह्माण्ड के देवता को संबोधित करके अपना काम निकालवा सकते हैं। इसमें बस ख्याल की शक्ति की आवश्यकता होती है। ख्याल की शक्ति अपने जैसा दूसरा शरीर बनाकर उससे काम करा लेती है तथा दूसरे जीवों को स्थूल शरीर भी दे देती है।

मनुष्य को चाहिए कि उसको परमात्मा ने जो महानता बख्सी है, उसका उत्तराधिकारी बने। अपने आपको पहचाने और अपने जीवन का लक्ष्य सुरत–शब्द–योग के अभ्यास से पूरा कर ले।